रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्।।२३।।

रुद्राणाम्=रुद्रों में; **शंकरः**=शिव; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **वित्तेशः**=कुबेर; **यक्षरक्षसाम्**=यक्ष-राक्षसों में; **वसूनाम्**=वसुओं में; **पावकः**=अग्नि; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **मेरुः**=मेरुशिखर; **शिखरिणाम्**=पर्वतों में; **अहम्**=मैं (हूँ)।

अनुवाद

मैं सब रुद्रों में शिव हूँ; यक्ष-राक्षसों में धन-देवता कुबेर हूँ; वसुओं में मैं अग्नि हूँ और शिखरों में मेरु हूँ।।२३।।

तात्पर्य

ग्यारह रुद्रों में शंकर (शिव) प्रमुख हैं। वे श्रीभगवान् के गुणावतार हैं और ब्रह्माण्ड में तमोगुण के अधिष्ठाता हैं। देवताओं के प्रधान कोषाध्यक्ष कुबेर भी श्रीभगवान् के रूप हैं। मेरु शिखर अपनी प्राकृतिक संपदा के लिये त्रिभुवन में विख्यात है।

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः।।२४।।

पुरोधसाम्=पुरोहितों में; **च**=भी; **मुख्यम्**=प्रधान; **माम्**=मुझे; **विद्धि**=जान; **पार्थ**=हे अर्जुन; **बृहस्पतिम्**=बृहस्पति; **सेनानीनाम्**=सब सेनानायकों में; **अहम्**=मैं; **स्कन्दः**=स्कन्द (हूँ); **सरसाम्**=जलाशयों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **सागरः**=समुद्र।

अनुवाद

हे अर्जुन ! पुरोहितों में मुख्य, भक्ति का स्वामी बृहस्पति मुझे जान; मैं ही सेनापतियों में युद्ध का अधीश्वर स्कन्द (कार्तिकेय) हूँ और जलाशयों में समुद्र हूँ।।२४।।

तात्पर्य

इन्द्र स्वर्ग का अधिपति और प्रधान है। उसके लोक को इन्द्रलोक कहा जाता है। देवराज इन्द्र के पुरोहित बृहस्पति सब पुरोहितों में प्रधान हैं। जिस प्रकार इन्द्र देवराज है, उसी भाँति शिव-पार्वती के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय) सब सेनापतियों के प्रधान हैं। सब प्रकार के जलाशयों में समुद्र की सब से अधिक महत्ता है। श्रीकृष्ण की इन विभूतियों से तो उनकी अनुपम महिमा का वस्तुतः आभास मात्र ही होता है।

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः।।२५।।

महर्षीणाम्=महर्षियों में; **भृगुः**=भृगु; **अहम्**=मैं (हूँ); **गिराम्**=वाणी में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **एकम् अक्षरम्**=प्रणव; **यज्ञानाम्**=यज्ञों में; **जपयज्ञः**=भगवन्नाम जपकीर्तनरूप यज्ञ; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **स्थावराणाम्**=अचल पदार्थों में; **हिमालयः**=हिमालय पर्वतमाला।